





Proceedings

11th National Conference
on
Electoral & Political Reforms

11th ANNUAL NATIONAL CONFERENCE on ELECTORAL & POLITICAL REFORMS

Organised by

West Bengal Election Watch (WBEW) &
Association for Democratic Reforms (ADR)

Venue: Ramakrishna Institute of Culture, Golpark, Kolkata, West Bengal

Date: 21st & 22nd March 2015

ASSOCIATION FOR DEMOCRATIC REFORMS

For further information, please contact:

Association for Democratic Reforms

T-95A, C.L. House, 1st Floor,

Near Gulmohar Commercial Complex

Gautam Nagar,

Landmark: Green Park Metro Station (Gautam Nagar exit),

New Delhi-110 049

Email: adr@adrindia.org Media Queries: +91-80103-94248

Telephone: +91 11 41654200/01/02/03

Fax: 011 4609 4248

Web: myneta.info NATIONAL ELECTION WATCH adrindia.org



Find ADR on Facebook www.facebook.com/adr.new

Find ADR on Twitter www.twitter.com/adrspeaks

Copyright © Association for Democratic Reforms (ADR), 2015. This work may be reproduced, excerpted and/or translated for noncommercial purposes provided that ADR is acknowledged as the source of the material and is sent a copy of any translation.

Select Press Coverage

The Indian EXPRESS

IOURNALISM OF COURAG

CEC: Will link with Aadhaar to ensure no duplicate voter ID

KOUCATA I MARCH 21

INDIA will soon become she only country in the world to have biometric data with no duplicacy in the voters' list, Charl Election Commissioner 18 5 Brohma said Saturday. by linking the unique ID And identity card.

haar numbers will the penerpred for the remaining 25-30 by August this year. By the numbers will be looked to the And then India will be the only country in the world surfected Diyears.

biometric of voters. Also, there will be not a single fraud or duplique voters," Brahma said.

Asked about 5C order which had said that Andhaur in not a prerequisite for avail-ing public services, he said He said this will be achieved everyday laklin of somers are seeding their names with Andhair card on their own. Everyday our voters are "We are hopeful that And themselves seeding their names for Audhaur cards). We do not want to make it truce people factors India) compulsory but our voters. by August this year. By the themselves want it," the CEC. end of the year, the Andhuar said. He said the BC was planrang to revoke registration of elector's phosoidentity card. political parties, which have sever merened any election

The Sunday Statesman

Aadhar-voter card inking not compulsory'



KOLKATA SUNDAY 22 MARCH 2015

CEC may de-register 'dormant' parties

the

try in the world o





আনন্দবাজার পত্রিকা

ভোটে না পড়লে কেন

থাকবে দল. প্রেম রুজের

The forestern officers but a second of the s

and the property and the second secon

The second secon



গণশক্তি





রাজ্যের শাসকদলের বিধায়কদের বিপুল অংশই ফৌজদারি অভিযুক্ত

বাবে তাল কুং কৰি যাকটি, বিনারীয়ার বাবে অভিযোগ অভিযুক্ত শাসালালে এয়ার। এর অভিয় বাহের অভ্যুক্ত এয়ারিত পার বলৈর পরিবা কর্ম আহলম করার অভিযুক্তবালি সিশিক্ত করাল क्षाण्य कर कार्य, जन्म क्षाणक पर नाम क्षित क्षितिक विद्याण विदेश निवास वार्या कार्याण क्षाणक पर प्रश्निक वार्या विद्या कार्याण क्षाणक पर प्रश्निक व्याप्त प्रश्निक वार्याण क्षाणक व्याप्त प्रश्निक वार्याण क्षाणक विद्याल कार्याण क्षाणक पर प्रश्निक व्याप्त विद्याल कार्याण क्षाणक वार्याण क्षाणक पर्याच विद्याल कार्याण क्षाणक व्याप्त कार्याण पर्याच कार्याण क्षाणक क्षाणक व्याप्त कार्याण पर्याच कार्याण क्षाणक क्षाणक कार्याण पर्याच विद्याल प्रश्निक व्याप्त कार्याणक वार्याणक विद्याल प्रश्निक वार्याणक व्याप्त कार्याणक व्याप्त विद्याल क्षाणक क्षाण कार्याणक वार्याणक व्याप्त विद्याल क्षाणक क्षाणक कार्याणक वार्याणक व्याप्त व्याप्त

কৰা যাত্ৰ হিন্দিপাৰ বনুধা কৰাৰ দী পাণ। লগাৰ জৈন প্ৰথম পাৰত আৰু নিৰ্ভাগনাৰ ২১৫ চন নিৰ্ভাগন আৰু ১৬৯বৰ আঁচাৰ আনাৰ সামেন্ত লোনক অগাই নিৰ্ভাগ অনাকাৰি।

প্রতিব কালাকা ক্রম ক্রমে অন্তর্ভিক শাবানিক বিশ্বর প্রতিবিশ্বর বিশ্বর প্রতিবিশ্বর বিশ্বর প্রতিবিশ্বর বিশ্বর প্রতিবিশ্বর বিশ্বর প্রতিবিশ্বর করে ক্রমের করে ক্রমের বিশ্বর প্রতিবিশ্বর করে ক্রমের ক্রমের করে ক্রমের ক্রমের ক্রমির করে ক্রমের ক্রমের ক্রমির করে ক্রমির করে ক্রমির করে ক্রমের ক্রমের ক্রমির করে ক্রমের ক্রম



SELECTION REPORTED IN

A DECISIO SERVICE AND AND ARREST & DESIGNATION AS

কালো টাকার প্রভাব রোখাই সবচেয়ে বড় চ্যালেঞ্জ ভোটে

of the just marries of 1914 on white higher has produce

Control was been been been come to be a second to b

Seve aligne servers

parameter (perce (pitrat)) at y trops (perce) to the percent and the percent a

E as there were over on Door water (od) In Brill's were the author we we



বাংলাল পানতে পানাটী বিচাপ, কোটো বাংলা টালাল পান্যত্তা কাৰাত নিৰ্দান কৰিলেকে মুক্তিৰ কাৰ্যাক লিকা কাৰাকী লোকী পানাই টিলাই পানাতে পানীপানা নিৰ্দান কৰিলে তথ্য পান্যত্তা বাংলাক তথ্য যে পানাই কৰ্ম, যে কৰা পানাটো পানাৰ ভিক্তিৰ ক্ষিপ্ৰতিবাৰণ

मिनक (अरिअया)

ভোটে না লড়লে রাজনৈতিক দলের স্বীকৃতি বাতিল করা হবে, জানালেন মুখ্য নির্বাচন কমিশনার

তিকা প্ৰতিটো - এমৰ বেতালৈ কা প্ৰতান কৰিবলৈ - কাৰ্য্য আৰু বা বাংলা কৰিবলৈ কৰিব

And the second s



Star Character of the star Star Star Character of the star of the

cutofic welling private on

ander test order give and was one alone and the roof are orde and coupling any once or his more fellow of a priority and man man byte and man my whome pe spins byte for every person on forest figure







चुनाव नहीं लड़ने वाले दलों का रद होगा पंजीकरण

जनन बूरे, ठोस्थतः : नेद्रीर पुरार आचेत ऐसे राजनीतिक दाने का पर्यक्रमा द काने पा विद्या का रहा है, जिस्तेने ब्लिने 5-10 वर्षे के दौरत बंधे पुराव सी सह है। सब है आदेन ने चुना में पन-बर के दुश्यकेत पर तेल सराने के जिल् सका बातून बतने या थे की दिया और पुरावे प्रक्रिय के साथ राजनीतक दाने में थे





सम्बद्धाः अपूर्ण विव सम् क्षत्रे व संस

मुक्त की करना बन्दें हैं। मुख्य पुत्रक अस रद तेने की स्वक्रम पर नेर्वाल के अपूर्ण एक्ट्रा बढा ने शनका को किया का ता है। बहा हर हर दर्ज के बोलबात में तेज बंदन इतेबार चंद ज़िताब संबी बदन उठने की बंद रहे हैं, (इस्पूर्वेडस्पु) एवं एवंदिग्रास और दिनते बन वे बन वे वे वेन विधासक वेबेबेटिक रिफॉर्न (एडीआ) भी ओर ने भूनव अथव एक मंत्रवीय पुनव नडी लड़ आरोपित पार्यक्रम में बता कि वर्षमा में हैं। किस्ताल इस ऐसे लिया सन् करने की देश में 1,600 में भी अधिक पंजियत दश है। जिसीत में नहीं है, लेकिन दखत बड़ा तो नह इतने में 200 में भी बन परियं पूराव है। जिल्लीवन एक प्रसाद है। उसने बस्त का हिल्ला तेती है। अगर बोर्ड पार्ट पोर्च, वात आहत बाते हुए बहा कि पुत्राचे पार्ट का अथव १८ सान तक किसी भी पुनव में इंडबर करने के बबाए लोगों को पुनव में रिम्म को लेले है में प्रमान पंजीवतन अपने - सर्वाप कप में हिन्स लेल स्वीहर,

of own has detail cown away on their san रविवार 06× **08 grif dilte beglane i not seen on any bear

किसी के पास नहीं होंगे मतदाता पहचान पत्र

मुख्य चुनाव आयुक्त एचएस ब्रह्मा ने कहा – इसी साल पूरा होगा काम

2012001

क्षात्रक अधिकार स्थाप क्षेत्रक व संस्था को बात कि नात्र क्षेत्रक से कृति कृति अधिकार स्थाप क्षेत्र erivers it ift depe order to 40 index set 4 dept 4 का जनगण पूर्व में बोटू रीनाव वर्तातेक अंग्रेकेताव क्राफ्ता का कि कुक्त अर्थन कि कर में बन r cris it. Child yie sel it. Lico Stock Next of solve is, you th

arms under the off the arms of the specifience statement and the six of the ent to state and cooks to open it with my conditioned रका वर्ग तीया. तम विदेश रूप में इत्तर में तो इस जान की दूध कर रचे तो तब ध्यान होन्छ है। स्टब्स्ट देखें देखें होता, जार ornesi di cristiya same no ou it and a said



at very later of whose per pays to their without the per-

पुर्वात कोर्ट के इस अर्थाल की ओर अपूर्वात विकास की कि सार्वासक start office and a few cases eti gi mi añ i, na cidi च्या हिंद बाएसा यूट ही अंतर कोई बातका मुखे के बुद्धाना है. अनीव चारा कि दल रोफ हमारे कराना अंकर कोई बुद्धानी है.

her out more by ur of FR 16 Ideas of one करों हैं, लेकर करहर क्षा रेस करों हैं, का अध्योतका है, बहु हैं रेत के वर्षा क्यांको से अन्त्रिक मुत्ती में रेतावर नेकर को अपना को प्रोर कर्ता के अस्त्रको नेकांक tion our age of several

बुनक्ष मही लड़नेवाले हातों का प्रात्मकत्त्व होता रह

exists been as and deads विकारित पर सार विकास प्राप्त है। अप्रेस्तार के साम करता प्राप्त कर के स्थाप के स्थाप कर कर कर कर कर कर कर कर के स्थाप कर कर कर कर कर कर कर कर क Street Lage Compadye. Gr.E. Dent it jus it ellen gait affen it from Abb. oner phone ou a ordan of page of manifes an are no hard Bert diebe id Elbrufte वर्षा पार्टी क्या सामन्या कार साम स्व १० राजन की अवस्थित स्विधानि में कुतार में दिल्ला की तर्रों से ती periodisco pot por igal etc. sett pieto t proe b विकास पुत्रा पार्टर कवा उटारी की रहेद रहें हैं. टिल्क्सि कब में कब दें पी चीर काम क्रिकारमा दुवदाय Lin wage der eit w



मतदान पहचान पत्र के साथ जुड़ेगा आधार नबर

मार्च aireatet. 58 (नि.प्र.)। जाली वनदावाओं पर

लगाम असने के लिए सुनाय आयोग ने अब धतदाता पहचान

पत्र के साथ

आधार कार्ड को जोड़ने का फैसला लिया। आज महानगर में एक बतर्पक्रम में हिस्सो लेने पहुंचे मुख्य चुनाव आयुक्त एच.एस. ब्रह्म ने करा कि मतदाता पहचान पत्र के साथ आधार काई का तंबर जोड़ा जाएगा। इससे किसी व्यक्ति की पक्षी पहचान हो जाएगी और जानी मतदाना चोट नहीं दे सर्वेने (उन्होंने कहा कि अप्रैल से इस पर काम शुक्त हो जाएगा, जो अगस्त महीने तक कानेगा। भी ब्रह्म ने कहा कि बोटर कभी घर-घर जाकर

मतदाताओं से अप्रैल से शुरू दस्ताचेज मांगेरी और उसकी होगा काम सटिक जांच करेंगे । खुनाय

आयुक्त ने कहा कि इस काम में लोगों का सहयोग बहुत जरुरी है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि चालू वर्ष के २५ जनवरी से नेशनल बोटर सर्विस पोर्टल शुरू किया गया है। यहां मतदाता खुद अपने योदकार का संशोधन इत्यादि सक्ते हो । WITE www.Nationalvoter serviceporter.com यर पूरा अवीरा बिल जाएगा ।

ALL ANTANAMANTANAMA MAANTANAIA

देश में सबसे ज्यादा डोनेशन भाजपा को मिलां

क्षी को करोड़ी रुपये हुमाइ लेते हैं सहीय एउनोरिक दल

होत तन्नीतित दर्श वो अस्टीमा वे वारों में इनेकी पान

त्र प्रतेष सं क्षेत्र तमे व्यवस्था क्षा क्षा तमे हैं तिला नहीं जी gue de pre distribute que la des les é agles codés est predia repair als relations predia repair als relations of plans do for the wife n adi Eyri d da ren. (100 % कीए वर्ष करते हते. इसे संस्था की की की कुमा है element ort.

a grangementle or emderded and 2000 projected of part is to the state of the state of

एडी आर एंड डब्ल्यूबीडडब्ल्यू की रिपोर्ट में हुआ राज्याता

20-sthates partitions. PER PARTY. pro-salabilities eadler to ILINEA PRINT ALC: UNKNOWN DESCRIPTION OF **WATERWAY** MARKET STREET SHIP BUILD DOMESTIC: 75 **ACA** Ħŧ ø NU BOOM 11 育 mbb Linkson ALC: UNKNOWN A.H-REIT source and SEASON PROPERTY. 加克相牌 11 280 DE SORTIN 14/11/00/FRENDS THE RESIDENCE AND BARRIE mixto de mi especialist model in and dire went with

factorização de esta para de la compansión esta para esta para esta para de la compansión esta para esta p requestioned transitions, both at the P dat of Jay de die offe case in 199 त्तर कृष वर्त वर्द्धन वर्तन है के प्रवान के तीन होट होना बर्डिय NAME AND ADDRESS OF THE PARTY. sing statut page & this pag is sittler fore helphaly sport and

gert en fint die pie क्षेत्र प्रश्नीम वर्ष ज्ञानीते est state it et it der falt

the a special to be the contract of the state of the stat my rek plan bet pal der Extra 3 month and all per troublent of an all on a right collect 163 of Course or Person

men graving on an an o gim t mt er et b atere à first un giere è त्र बड़े हे हैं जीत स्वयूत्त एते ता स्वयूप्तांच्या हो या द का साम काइप्तकार को यहिल eine under bief fim ता बांधुं से दी की हैंगा। इंग्लंबर कार्ड रहे से सा ती से में नवींय वर्ष के पूर्व के

feet & want hit effe.

rared; it birger gine & the ret que Sen men eine men u entel eine all felbeb m ment of the second a si pine per al p HE'S ME SHE'S TO refrance to 142 mg ref. with pleas best of mount but It





Table of Contents

Acknowledgement	7	
Executive Summary	8	
Agenda	9	
Documents Distributed to the Delegates	10	
Minutes of the Sessions	11	
Day – 1 (21st March '15)	11	
Inauguration & Welcome Address	11	
Address by Shri H. S. Brahma (CEC, India)		
Making flow of money in politics transparent: a case for good governance	16	
Time to Build a Functional Democracy: Empowering Local Body Institutions		
Need to enhance transparency and accountability in political parties		
Vote of thanks	31	
Day – 2 (22 nd March '15)	31	
2014 Lok Sabha and Assembly elections: Lessons learnt and future course of action		
Media Neutrality and its Significance in democracy	37	
Resolutions and 'Next steps for NEW'		
Photo Gallery		





Acknowledgement

We take this opportunity to thank Mr. Biplab Halim, Dr. Ujjaini Halim and the West Bengal Election Watch (WBEW) team for making the 11th National Conference on Electoral and Political Reforms, a grand success.

The Conference would not have been a possibility without our eminent speakers and participants; we thank them for their participation and valuable inputs. Special thanks to the media and the journalists who have always been very supportive of our work and have been the main medium to reach the masses.

We are profusely thankful to Shri H.S. Brahma, Chief Election Commissioner (CEC), for his presence and inputs at the Conference and extend our gratitude to the Election Commission of India (ECI) for its constant support of our efforts. We would also like to thank all the other dignitaries, whose participation added to the impetus and synergy to our work.

Association for Democratic Reforms (ADR) would like to thank the participants from political parties, the ECI, West Bengal Assembly, NGOs and others who dispassionately reviewed our past efforts on electoral and political reforms and came forward with thought provoking suggestions to remedy prevailing issues.

Last but not the least, we are deeply grateful to all our State Election Watch coordinators and partners for their participation and support in reaching out to the citizens across the country. We conclude by thanking the management of Ramakrishna Institute of Culture, Golpark, Kolkata for their consistent support before and during the event.



Executive Summary

This year, the Annual National Conference was held in Kolkata, West Bengal with the primary focus on Electoral and Political reforms. The Conference was held with the aim of bringing together and synergizing efforts towards strengthening democracy in our country.

The Chief Election Commissioner, Shri H. S. Brahma inaugurated the Conference. Representatives of the National Election Watch (NEW) from each state chapter, members of political parties, government institutions and media were present to deliberate on issues related to electoral and political reforms in the country. The National Conference was an opportunity for us to add impetus and synergy to our work by bringing together all stakeholders. Their participation and inputs were instrumental in making the Conference a success.

Topics of discussion during the 11th National Conference ranged from 'Making flow of money in politics transparent: A case for good governance', 'Time to build a functional democracy: Empowering local body institutions' to 'Media neutrality and its significance in democracy'. These discussions were enriched by the participation of eminent people including the Chief Election Commissioner H. S. Brahma, representatives of political parties, civil society and the media.

At the end of the Conference, the house unanimously came up with recommendations addressing issues related to prevalence of black money in politics, political parties under RTI, criminalization of politics, etc.





Agenda

21st March 2015 (Vivekananda Hall)		
9:00 - 10:00	Registration	
10:00 –10:30	Lamp lighting National Anthem (Chief Guest: Shri H. S. Brahma, Chief Election Commissioner)	
	Inauguration & Welcome Address: Prof Trilochan Sastry (ADR/NEW), Shri Biplab Halim (WBEW), Shri Chittotosh Mukherjee, President, WBEW & Ex-Chief Justice, Kolkata & Mumbai High Court and Swami Suparnananda Maharaj, Secretary, RKM, Golpark	
10:30 – 11:00	Address by Shri H. S. Brahma, Chief Election Commissioner, Election Commission of India Chairperson – Dr. Ajit Ranade	
	Book release – Report on the Lok Sabha elections, 2014	
11:00 – 12:15	Making flow of money in politics transparent: a case for good governance Chairperson: Prof. Trilochan Sastry	
	Panelists: Shri Shailesh Gandhi (Former Information Commissioner), Shri P. K. Dash (Director General – Expenditure, ECI), Shri Nikhil Dey (NCPRI/MKSS), Shri Paranjoy Guha Thakurta (Journalist and political commentator), Shri Subhash Chandra Agrawal (RTI Activist)	
12:15 – 13:00	Open Session	
13:00 – 14:00	Lunch	
14:00 – 15:00	Time to build a functional democracy: Empowering local body institutions Chairperson – Shri M.N.Roy Panelists: Shri Sukhvilas Verma (INC, IAS Retd.), Dr. Gouri P. Dutta (WBEW, former member, State Planning Board, former MLA), Shri Nikhil Dey (NCPRI/MKSS), Shri Sudhir Pal (Manthan Yuva Sansthaan, Jharkhand), Ms. Pankti Jog (MAGP), Shri Chandan Dutta (WBEW)	
15:00 – 15:30	Open discussion	
15:30 – 16:30	Need to enhance transparency and accountability in political parties Chairperson – Prof. Jagdeep Chhokar Panelists: Shri T. S. Krishnamurthy (Former CEC), Shri Manoj Bhattacharya (RSP), Shri Prabodh Chandra Panda (State Secretary, CPI), Shri Asim Dasgupta (CPI (M)), Shri Amit Choudhary (CPI(ML)(L)), Shri Ravindra Kumar (M.D. & Editor – in – Chief, The Statesman)	
16:30 - 16:50	Open discussion	
16:50 – 17:00	Vote of thanks : Prof. Satyabrata Chowdhury, WBEW	
20:00 onwards	Dinner	



22 nd March 2015 (Turyananda Hall)		
09:00 - 09:30	Registration	
09:30 - 10:45	2014 Lok Sabha and Assembly elections: Lessons learnt and future course of action Chairperson: Maj. Gen. Anil Verma (Retd.) Panelists – Shri Sudhir Pal (Jharkhand Election Watch), Shri Ranjan Mohanty (Odisha Election Watch), Shri Anil Sharma (Uttar Pradesh Election Watch), Shri Ajit Ranade (Maharashtra Election Watch), Shri Rakesh Dubuddu (Andhra Pradesh Election Watch), Shri Balvinder Singh (Jammu & Kashmir Election Watch), Dr. Amiya Samanta (West Bengal Election Watch)	
10:45 – 11:00	Tea	
11:00 – 12:00	Media Neutrality and its Significance in democracy Chairperson: Dr. Vipul Mudgal Panelists: Shri Siddharth Varadarajan (Senior Journalist, Editor & Academician), Shri Sharad Gupta (Dainik Bhaskar, Editor, Political Affairs), Shri Suvojit Bagchi (The Hindu, Bureau Chief, Kolkata), Shri Snehashish Sur (Senior Journalist, Doordarshan Kendra, Kolkata)	
12:00 – 12:30	Open Session	
12:30 - 13:00	Resolutions and 'Next Steps for NEW' Chairpersons – Prof. Trilochan Sastry and Shri Biplab Halim	
13:00	Lunch & Dispersal	

Documents Distributed to the Delegates

- Analysis of Criminal Background, Financial, Education, Gender and other details of MPs and MLAs of West Bengal
- Analysis of Election Expenditure of Major Political Parties of West Bengal Lok Sabha 2014
- Comparison of Donations Received by Major Political Parties of West Bengal FY 2012-13 & 2013-14
- Background notes
- One pager on political parties under RTI

The above documents can be found at www.adrindia.org.





Minutes of the Sessions

Day - 1 (21st March'15)

Inauguration & Welcome Address

Prof Trilochan Sastry (ADR/NEW), Shri Biplab Halim (WBEW), Shri Chittotosh Mukherjee, President, WBEW & Ex-Chief Justice, Kolkata & Mumbai High Court and Swami Suparnananda Maharaj, Secretary, Rama Krishna Mission, Golpark



Swami Suparnananda Maharaj

Swami Suparnananda Maharaj welcomed Chief Justice Chittotosh Mukherjee, Prof. Sastry, Sh. Biplab Halim and all members of ADR & NEW and also attendees from various districts of West Bengal. He said organising the event was a good gesture on part of ADR as ADR is very keenly focused on introducing a system of conducting free and fair elections. He pointed out that it is very difficult to practice honesty in election process and the current effect of politics is that it is weakening the strong. He exhorted the political parties and politicians to rise above "politics".

Mr. Biplab Halim

Mr. Biplab Halim expressed great pleasure in seeing NEW delegates from all over the country; from Kashmir to Kanyakumari and from Arunachal to Gujarat attending the sessions. He said that this conference is going to add valuable contribution to the process of good governance and inclusive democracy. He heartily welcomed the Chief Guest for the day Mr. H.S. Brahma and over 1000 social activists, especially women activists from all the districts of West Bengal. During the conference, he said that people have always been a decisive force in the history since democracy belongs to people and therefore, their active participation can strengthen functional democracy.









Mr. Chittotosh Mukherjee

Mr. Chittotosh Mukherjee while welcoming Mr. H.S. Brahma, said that it was his pleasant duty to also welcome all other people present for the conference. He said that the conference was a platform which would **give encouragement to all participants and strategize to strengthen democracy**. He also observed that the Preamble of our Constitution, speaks about "We the People of India" and democracy on the basis of "Universal Adult Suffrage". He also pointed out the necessity to formulate strategies to exercise control over elected representatives and their functioning in the electoral and political process since it is important and vital for a vibrant democracy.

According to him another important aspect that we needed to ponder over was to **make Panchayat** institutions stronger at the grass root level.

Prof. Trilochan Sastry

Prof. Trilochan Sastry thanked West Bengal Election Watch for organizing the event and the audience for participating in the event. He said that the **most important question before everyone present in the conference was to understand why are we doing this?** Why are we working for good governance? He said that we all have been working together on this for the past 15 years. We have partners from all over the country. He also pointed out that **ADR does not carry any ideology to be imposed on our fellow countrymen**. The only reason behind doing this is that our efforts should benefit the "People of India".



He stated that important question facing everyone present at the conference was to **identify our** "Next step ahead". He said that it is a big task that we all have set up for ourselves. Giving the foundation of ADR & NEW work, he stated;

- 1. We will **speak the truth** based on our data/facts on the Candidates/MPs/MLAs/Parties and we will verify, cross-verify our data on the basis of the facts.
- 2. We are and will continue to be **impartial** and unbiased. We are not here for any political party.
- 3. **Transparency and accountability** two very fundamental aspects that we emphasise are equally applicable to us as this is what we are demanding from our Political Parties and Parliamentarians.





Address by Shri H. S. Brahma,

Chief Election Commissioner, Election Commission of India

Chairperson - Dr. Ajit Ranade

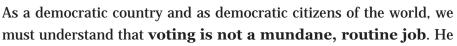


Dr. Ajit Ranade

Dr. Ajit Ranade said that this was **ADR-NEW's 11th in the series of National Conference** which we have been organising annually over the years in different cities. While introducing the Chief Guest for the day Shri H.S. Brahma, he stated that he had retired on 30th April, 2010 as Secretary, Ministry of Power, Government of India before joining the Election Commission.

Shri H.S. Brahma

Shri H.S. Brahma began by saying that the biggest challenge facing our country is **how to ensure that India becomes not only the largest but the greatest democracy in the world**. While posing a question before the audience, Shri H.S. Brahma asked - How can our representatives as well as political parties function properly? He said that our Parliamentarians should work for the greatness of the country and the biggest responsibility of the citizens was to ensure electing the "**Right person at the right place at the right time**".





emphasized that our citizens vote in a large numbers to ensure majority representation. He pointed out that though we have around **1600 political parties in India**, out of them **less than 200 parties contest elections**. Unless political parties are serious in serving the interests of the country and people, democracy will serve no purpose. We need to work on the political parties reforms since political parties are the fulcrum and main stakeholders - one cannot imagine democracy minus political parties. He also stated that **as long as the Indian citizens do not put pressure on the parties, reforms will not occur**. Therefore, electoral reforms and political parties' reforms should also be pursued simultaneously.

Shri Brahma held that in order to have an effective say in choosing the right government, it would be desirable that the majority of Indian voters vote in every election. He informed the audience that between 1951 and 2014, Election Commission has conducted 16 General elections and not a single political party or a candidate





has ever complained of any unfair practice on the part of the ECI. He said that the credibility of elections depends upon the credibility of the Commission itself.

He informed the audience that ECI has implemented a technology whereby one can see all details of the voters on ECI's website. A voter can see, correct and locate his/her name, address, polling station online. This system was introduced from 21st January, 2015. He stated that by August, 2015, ECI is going to link Aadhaar number with the voter IDs whereby India would be the only country in the world not to have any duplicate voter ID. With Aadhaar number, ECI is going to provide a system so that the voter can change the address. He also enumerated ECI's plans to have a National roll-out of e-services, National voter services portal (NVSP), a mechanism for e-voting and a system to have an encyclopaedia of election related information.

Shri Brahma also highlighted some major challenges facing the ECI like correction of electoral roll, use of muscle and money power, control of freebies distributed by the political parties or candidates, paid news, enforcement of Uniform Model Code of Conduct and challenges from electronic & digital media.

Shri Brahma dwelt upon various upcoming electoral reform proposals advocated by the ECI. A brief summary of the proposals is mentioned below:

- a) Introduction of another clause under Section 29A of the Representation of the People Act, 1951, authorizing the Election Commission to issue necessary orders for **regulating registration and de-registration of political parties.**
- b) Political parties should be required by law to get their **accounts audited annually by external auditors approved by CAG or ECI**, and to put them in public domain to enhance transparency in the fund raising and expenditure of political parties.
- c) Ceiling on expenses by political parties.
- d) A person accused of serious criminal charges and against whom charges have been framed by the Court, should be kept out of electoral arena. This would be a reasonable restriction in larger public interest.
- e) Amendment should be made in the Representation of the People Act, 1951, to provide therein **publishing** and abetting the publishing of paid news for furthering the prospect of election of any candidate or for prejudicially affecting the prospect of election of any candidate as an electoral offence with punishment of a minimum of two years imprisonment.
- f) A candidate should be permitted to **contest election from only one constituency**.
- g) There should be provision for **penal action against those making false declaration** in connection with elections. Making a false declaration has now been held by the Supreme Court as corrupt practice of undue influence.
- h) The punishments under all the four sections (Sections 171B (Bribery), 171C (Undue Influence), 171-G





(False statement about candidates), 171-H (illegal election expenditure) of Representation of People Act, 1951 should be enhanced and these offences **should be made cognizable**.

- i) There should be **four different qualifying dates** for deciding the minimum age for electors -01 January, o1 April, o1 July and o1 October. These may be specified as qualifying dates for enrolment. The ECI may decide the date to be chosen on a State to State basis depending on the period when election, if any, is to be held in the State.
- j) In order to deal with cases of dummy candidates with similar or same names as the prominent candidates entering the fray to confuse electors, ECI had decided to **print photograph of candidates** on the ballot paper.

Shri Brahma concluded his speech by quoting that our job does not finish by voting once in 5 years. **Regular pressure**, **monitoring and review is required** from all of us. He emphasized that "We-the citizens" are the key players in democracy. So it is our duty that we always remain **watchful**, **vigilant**, **alert**, **and inquisitive** of what our elected representatives are doing.





Making flow of money in politics transparent: A case for good governance

Chairperson: Prof. Trilochan Sastry



[Panelists (left to right): Shri P. K. Dash (Director General – Expenditure, ECI), Shri Shailesh Gandhi (Former Information Commissioner), Prof. Trilochan Sastry (Chairperson), Shri Subhash Chandra Agrawal (RTI Activist), Shri Nikhil Dey (NCPRI/MKSS), Shri Paranjoy Guha Thakurta (Journalist and political commentator)]

Mr. Nikhil Dey



Mr. Nikhil Dey stated that thanks to the way National Election Watch was formed and the way Election Watch is being conducted, information had become the source for everyone to monitor and regulate India's electoral process. However, we were still **struggling** to regulate and monitor the flow and influence of money in elections.

Bringing out the extent of corporate influence in our political system, he mentioned that regardless of who wins the election, the corporates wield their influence as they donate to all political parties and after the completion of elections exercise this influence is utilized to amend policy decisions to their advantage.

He praised the move which forces the candidates to reveal his expenditure details within 30 days of the result being announced. He stated the need for conducting audits of the candidates and the winners not just before the elections but also after the elections and not only of the expenditure but of their efforts in improving governance in their constituencies. He suggested that we **find the pressure points where there is rampant bribery and corruption** in the administration i.e. the avenues of corruption used by the MPs & MLAs to earn back the money spent and more. One such pressure point is the **power to transfer officials and public servants** which leads to bribery and collusion between the MLAs and the officials. Finally, he recommended that **public/social audits of a few MLAs/MPs chosen at random** should be conducted on a continuous basis (both before and after the elections) **to increase accountability** in the electoral and political system.







Mr. Paranjoy Guha Thakurta

Mr. Paranjoy Guha Thakurta began by posing a question on where the "Gangotri" of corruption began and stated that it is the nexus between business and politics. He also emphasized the need to stop corruption and money power in elections and politics. The first issue that he stressed on was that of political parties' auditing where he questioned the appointment of auditors by political parties. He was of the view that the parties should not be free to appoint auditors but appointment of auditors should be by the CAG. The second issue that he raised was regarding the expenses of the candidates and political parties. While the candidates declare expenditure which is

much less than the limit imposed by the ECI, there is no limit on the expenditure of political parties. **In the** absence of any expenditure limits for the political parties, there can be no transparency.

The third issue which he talked about was the **Rs. 20,000 limit on anonymous donations** and felt that this was the most important issue on which **public pressure was paramount**. Though he agreed that reasonable restrictions on cash expenditure are required, he strongly felt that the blanket limit of up to Rs. 20,000 in donations that are anonymously given, had to be changed.

He reiterated that if a change in legislature could be brought about, the public would be able to enjoy greater transparency in the election system, in the political funding, the system of funding political parties and the candidates who stood for elections. He felt that there was a **conspiracy at a higher level across the political class who do not wish to have transparency**; hence there should be **greater civil society pressure in order to usher in transparency**.

Mr. P.K. Dash

Mr. P.K. Dash agreed that the Constitution of India visualized multiparty democracy, but the architects of the Constitution had not visualized that the parties would stoop to such a level for money power especially, at the time of elections where there was rampant vote buying. The first **risk of big money in elections**, was that it **disturbed the level playing field**. Secondly, he touched upon the various **sources of money used by political parties** during elections and at other times. The other factor which he pointed out was that there are **cash transactions** for which details of donors were unknown.



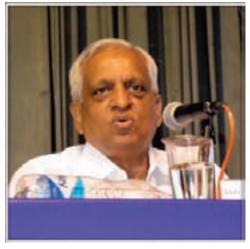
As per law, there was minimal legislation in this field and where it existed, he felt that it was ambiguous. He explained that in a situation where 90% of the donations were not disclosed, it would not be possible to ensure that the restrictions set by Section 29(B) of the Representation of the People Act had been met with. He raised a doubt as to how it could be ensured that a foreign company or a





loss making company had not donated below Rs. 20,000 to the political parties. Mr. Dash said that **through systematic legislation and awareness drives by civil society organisations, elimination of vote buying was possible**. He said that though there were middlemen to whom money was distributed, he visualized that the day was not very far when, the middle men in India too start demanding huge sums from political parties which would help the common man get the much needed amendment. He stated that once the voters become aware that money power was not going to help them in the long run and once civil society organisations put pressure in creating awareness not only among voters but also on the legislators to enact laws, then the much needed transparency will be achieved in political parties' finance.

He opined that **impartial investigation was crucial for transparency** but the penal action against defaulting candidates, is equally important. The Supreme Court had stated that if the affidavit filed by the candidate was proven to be wrong, the candidate would be disqualified by the court. He concluded his speech by stating that with these suggestions, he hoped that there would be a clearer picture as the election process in India was not so bleak. He stated in the end that he hoped we would **keep up the spirit of democracy in India** and that each one of us would **contribute to the strengthening of the democracy**.



Mr. Subhash Chandra Agrawal

Mr. Subhash Chandra Agrawal started by emphasizing on the need for electoral reforms and for the **control and monitoring of expenditure incurred by candidates**. He expressed disappointment at the fact that despite a number of Commissions coming out with various reform recommendations like Law commission reports, no action had been taken by the respective governments. He also brought out the issue of **regulating the registration of political parties**. Experience shows that most of them do not contest elections and their sole aim for registering a party was income tax exemptions.

He batted for the audit of national political parties by CAG itself. Further speaking on political reforms, he brought out the **shortcomings of the First-Past-the-Post system** where the percentage of votes against a candidate was more than the percentage of acceptance. His answer to this problem was that **NOTA rules be revised** to ensure that if NOTA wins, there should be a bye-election where NOTA is disabled and also that the candidates who were defeated by NOTA should be disqualified. He said that major electoral reforms have not been initiated due to the **lack of political will** and that in India the democracy has become "**For the politicians**, **by the politicians and of the politicians**". Reflecting on the unethical practices in Indian politics he stated that even some of our PMs have defaulted on public money with similar cases rife among the MLAs and MPs throughout the country.

He admitted that there are flaws in our democracy and that **public pressure is required to initiate reforms** on a large scale which in turn would go a long way in making India a role model for democracies around the world.







Mr. Shailesh Gandhi

Mr. Shailesh Gandhi began by asking whether it was the right time to impose an impossible limit on election expenditure of candidates. He said that it was to be understood that not all people who join politics enter the arena with a criminal intent or malevolence in their mind. He strongly felt that the society had created an environment wherein if a person intended to join politics, the only way through which that could happen was through dishonesty, whereas he/she might have wanted to join to bring electoral reforms in the political system. By imposing a limit on expenditure, the candidate with honest means would not be able to win the elections.

Mr. Gandhi asked "what if the candidates' election expenditure limits were completely done away with?" As the statements submitted by the candidates were anyway incorrect, disclosures in the public domain served no purpose. He stated that the Election Commission is **unable to unveil a lot of the discrepancies submitted by the candidates** nor is it able to investigate and penalize the erring candidate. Mr. Gandhi felt strongly that **if the vicious cycle of dishonest disclosure was continued, the electoral system would not be reformed**.

Finally, he talked about the laudable judgement of the Supreme Court (which ADR made possible) which ensured that the contesting candidates declare their asset details in their affidavits. But the problem was that there had been no dent in dishonesty because of the judgement. He suggested that the **affidavits filed by candidates should be scrutinized by the Income Tax authority**. As this action did not require any legal backing but only the will of the Election Commission, he felt that the ECI should forward the affidavits of at least the winning candidates and the first runners-up to the Income Tax department for verification against the candidates' IT Returns.

Open Session:

Prof. Chhokar: He said that earlier we used to witness that law-breakers were becoming lawmakers but now even political parties have become lawbreakers as was evident by the open defiance of the CIC order by the six National political parties. Hence resolution should be passed against political parties as well. Further he opined that it is not possible to bring out the desired reforms as it is the government and ruling party which has to work towards it. He provided a few instances supporting his opinion referring to the attempt to pass an amendment which would overturn the CIC order terming political parties as public authorities. He said that the repeated attempts to usher in reforms have failed as the Parliament tries to block every such attempt, including the Supreme Court verdicts.







Time to Build a Functional Democracy: Empowering

Local Body Institutions Chairperson: Mr. M.N. Roy



[Panelists(left to right): Dr. Gouri P. Dutta (WBEW, former member, State Planning Board, former MLA), Shri Sudhir Pal (Manthan Yuva Sansthaan, Jharkhand), Shri. Sukhvilas Verma (INC, IAS Retd.), Shri Nikhil Dey (NCPRI/MKSS), Chairperson — Shri M.N.Roy, Shri Chandan Dutta (WBEW), Ms. Pankti Jog (MAGP)]



Mr. M.N. Roy

Mr. M.N. Roy commenced the discussion by referring to the recent report of the 14th Finance Commission which highlights the need to improve the services at the local level by strengthening grassroot democracy. A proper democratic set up, he stated, is essential at the local level to nurture productivity and efficiency in governance.

Mr. Nikhil Dey

Mr. Nikhil Dey began by questioning the veracity of the common claim that Panchayat Elections are the most representative grassroots elections in a democracy like India. He put forth the example of the ordinance passed by Rajasthan State Government which, according to him was completely undemocratic and unrepresentative. The ordinance made it **mandatory for a candidate contesting for the position of a Sarpanch to be at least 8th class pass and a candidate contesting in Panchayat Samiti elections or Zilla Parishad elections to be at least 10th class pass. He went onto state that the manner in which the ordinance was passed by the Rajasthan Government i.e. 4 days**







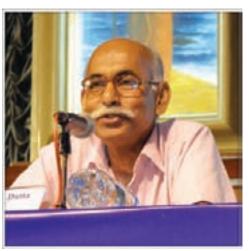
before the Panchayat Raj elections in Rajasthan and 2 days after the courts had closed, were proof of the fact that no discussion or debate was desired on the matter from the electorate at large. This draconian imposition on the electorate he stated, excludes 95% of the women and 80% of the general population in Rajasthan who are not 8th class pass. The message that goes out to this section of the electorate is, "Go and vote, but the baton of power would remain with us (the elite)".

Mr. Nikhil Dey opined that through this law and many other similar laws such as this (laws making it mandatory to have toilets or not having more than two children to be entitled to contest elections etc.) there has been a **complete capture of power by the elite**. He also mentioned that while many people claim that having educational qualifications as a criterion to contest elections would reduce corruption in elections, he believed that after 5 years, corruption would in fact increase. He said it is unreasonable to expect a person who does not even have a proper house, to have a toilet in order to contest elections. He called for an organized protest against such laws as a part of National Election Watch.

Mr. Dey, presenting a few success stories of MKSS, stated that as an organization they fielded 3 to 4 candidates in the panchayat elections for the position of Sarpanch on the condition that the candidate does not spend more than Rs. 1000 for the election campaign. It was found that consistently **some of the good and honest candidates won the elections**. On this note he also added that in order to have effective governance at the grassroots level, it is important to **decentralize executive authority** at the level of the panchayats.

Presenting a few more examples of the work done by MKSS at the grassroots level, Mr. Dey stated that a Janmanch (direct meeting of the candidates with the electorate) was organized wherein written manifestoes were taken by the candidates and assurances of good honest and clean governance were made to the electorate. Even though after the elections there have been cases where some promises were not adhered to, this interaction with the electorate paves the way for public scrutiny and accountability of the candidates before and after elections. The Janmanch was recorded on video and CDs for the same were distributed among those interested. It was also decided that social audits of the panchayats would be conducted every 6 months.

Mr. Dey concluded by stating that these measures provide a space for the electorate to scrutinize the behavior of the candidates and improve the responsiveness of the whole system of governance at the grassroot level.



Mr. Chandan Dutta

Mr. Dutta began by giving a brief historical context to the establishment of Panchayati Raj by stating that even though we as a country pride ourselves to be a democratic republic, in 1950, the Constitution did not mandate the conducting of local body elections. It was merely stated in the Constitution that if the states wished to do so, they could conduct local body or panchayat elections. Because it was not mandatory to hold local body elections or Panchayat elections, many states did not establish this form of decentralization for many years. Only a few states like Rajasthan and Madhya Pradesh took up the mantle of conducting





local body or Panchayat elections however even that was in its nascent form. After about 42 to 43 years, when a lot of discussion and debate had already been done on the subject, the 73rd Constitutional Amendment was passed making it mandatory for the states to conduct local body elections and the system of **Panchayati Raj was first given legitimate Constitutional backing**. Women were given representation through reservation of at least a third of the seats in the Panchayats. The decentralization process was further extended to include **Gram Sabhas and Gram Sansads providing the space for small villages and tribal communities to have their own electoral process**. In all intents and purposes Mr. Dutta stated, this was a very good amendment to the Constitution and in states like Rajasthan, Madhya Pradesh, Sikkim and Himachal Pradesh this amendment brought forth some very positive changes in local governance.

Mr. Dutta however went on to state that even though the 73rd amendment was a powerful amendment legitimizing the mandatory conduct of panchayat elections, after 10 to 12 years it was seen that there were many problems plaguing this system. He briefly enumerated the following points of concern regarding Panchayati Raj in India:

- 1. There has been a tendency to control the Panchayats, rural and urban local bodies from the top or the centre. **Real decentralization of authority** and executive power has not happened.
- 2. There is creeping **influence of political parties in the Panchayats** leading to a partisan bias and an unhealthy control of partisan interests on local governance. This unhealthy form of influence of political parties disrupts the natural social structure of the local communities dividing them even further. Political parties have guidelines on managing local body institutions which essentially means that they intend to capture power and control authority at the local level through Panchayats.
- 3. There is a form of **stagnation** in these bodies at the local level due to a **lack of real or practical executive authority**.
- 4. One of the **main purposes** of establishing Panchayati Raj was to give **space to under-represented**, backward and underdeveloped sections of the society, especially women, by decentralizing authority and power of governance at the local level. In practical terms, even this has been failing.

Mr. Dutta having enumerated the points of concern given above went onto state that hence it was important to **get together as a community**, a movement and a responsive electorate, to scrutinize the current system and question the political parties and the Centre on their capture of power and control at the local level. It was hoped, he further stated, that the 73rd Amendment in the Constitution would help decentralize developmental planning to the lowest level of governance. However, in practical terms, he opined, this has not occurred.

Further, he went onto say, many panchayat and local body elections are getting postponed. It **should not require a court directive to conduct these local body elections** as these are mandated by the Constitution itself. However, presently this seems to be the case. He referred to a previous session wherein it was discussed that the political parties were in defiance of a law (the RTI Act) they themselves helped create. Mr. Dutta stated that this kind of defiance is also true in the case of Panchayat elections wherein postponement of local body elections is in direct defiance of the law established by the Constitution itself. In conclusion,





he stated that he was in agreement with Mr. Nikhil Dey regarding the need to come forth with a common resolution from this conference that **local body elections and their functioning is established in the manner it is mandated by the Constitution**.



Mr. Sukhvilas Verma

Mr. Sukhvilas Verma began by stating that it is important to note that through the 73rd and 74th Constitutional Amendment, the authority was given to the States to conduct Panchayat Elections. He stated that in his experience as the Chairman of the State Finance Commission of West Bengal in 2007-08 when he travelled across the country he found that in practical terms many states had not established this structure of local governance.

Further, he stated, it had been mandated that the 29 state subjects would be devolved to the local body institutions and their role, responsibilities and authority would be defined regarding those

subjects. The roles and responsibilities should have been defined through a notification as mandated by the West Bengal Panchayat Elections Act, 2003, however that notification was never issued.

It is now seen, he opined, that these **Panchayati Raj institutions merely work as the agents of the Centre and the State**. They merely implement the schemes generated by the Centre and the State like the MNREGA and the Right to Food Act etc. Panchayati Raj institutions, Mr. Verma stated, do not have any authority or autonomy to take up their own developmental activities or projects.

Further, he stated, the state of District Planning Committees is dismal. The plans chalked up by these committees across the state reflect a **lack of any political will**. This is because there has been no devolution of work and authority to the Panchayati Raj institutions as also **limited funds are designated for these bodies**.

Mr. Verma stated that there is a tendency to call these institutions corrupt and to claim that any devolution of responsibility or authority would only increase this corruption. However, he opined that these **Panchayati Raj institutions are corrupt because of the lack of autonomy** given to these bodies. He posed a rhetorical question, "If Panchayati Raj institutions are not given the responsibility and authority to undertake their own projects, how can they be expected to be accountable?" He suggested that an overall awareness of this situation needs to be generated.

Lastly, giving the example of West Bengal he stated that through a state notification it was mandated that all activities related to developmental projects need to be conducted through the SDO and the BDO. This limits the scope of the Panchayat bodies even more. In conclusion, he stated that the current scenario is very grim and thought needs to be given to the future of Panchayati Raj institutions.







Ms. Pankti Jog

Ms. Pankti Jog began by stating that ever since the RTI Act had come into existence, the MAGP had tried to bring this Act to the villages. She went on to enumerate **many success stories related to the work that MAGP had done at the grassroots level**. She enumerated three points that indicate whether there is a functioning democracy:

- 1. Informed citizens.
- 2. Inclusive participation.
- 3. Accountability of all governing bodies to the electorate.

She stated that there cannot be functional democracy in an area where all these indicators are missing.

She went on to state that citizens at the grassroots level are not provided with any information or are provided with distorted information. Their voices are not heard and there is no mechanism for grievance redressal. Further, there is **no scope for their participation in governance** and accountability moves upwards instead of moving downwards to the citizens, with the village Sarpanch being accountable to the upper level but not equally accountable to the citizens. Similarly, no collector, BDO or MLA comes to the village to give a report on the current activities undertaken by them and thus accountability does not move towards the citizens.

Ms. Pankti stated that because of these reasons, citizens were thus losing their faith in the whole governance system and the power they have as citizens of the country.

Giving their experience as a part of MAGP, Ms. Pankti stated that if citizens were given the space to voice their concerns, if they are provided with information that is accessible to them and is factually correct and if there is constant support given to the citizens so they can register their complaints and can draft RTI applications, then there can be a lot of positive change.

She further said that while there is still a situation where a Dalit cannot move freely in an area where the upper caste reside and when these communities face deep social discrimination in their own villages; it is important to empower people like these through the Panchayats.

She further gave the example of an intervention undertaken by MAGP called RTI on Wheels. This was an effort to **reach the most marginalized communities with information** that relates directly to their lives and empower them to file their own complaints and RTIs to seek redressal. The program helped reach the communities and give them the legal knowledge and training to take up their complaints with the establishments.

It was found out, she stated, that people were responsive to this kind of intervention and eager to get information and help. These interventions were directed through the Panchayats and the Panchayat members





were intricately involved in disseminating information to the village. These **interventions also empowered the citizens to question social and political equations** that bred discrimination and injustice.

She concluded by stating that while there is a long way to go, as long as the **rural communities are engaged positively and given the space to voice their concerns** there would be hope for a better future.



Mr. Sudhir Pal

Mr. Sudhir Pal began by stating that it took 12 to 13 years of struggle before Panchayati Raj elections were conducted in 2010 in Jharkhand. The second term for these bodies would begin in the coming months of July and August. He further stated that while the 73rd amendment states Panchayati Raj institutions should be autonomous, in reality however, it was seen that instead of being the third tier of governance, these bodies simply **acted as an agency that implemented the schemes of the Centre and the state**. These schemes are implemented by politically motivated institutions (for example the PDS distributor is from a political party cadre) and the Panchayat

bodies are asked to work with these politically motivated institutions to implement these schemes in their areas.

Mr. Pal went onto state that Jharkhand has a reservation of 50% seats for women. In the panchayat elections, 56% of the seats were won by women and especially by women from the marginalized tribal communities. As a result, women have started taking up initiatives to bring in change. They are more mobilized in leading their communities to change. Additionally, he stated, **Gram Sabhas have become more aware and alert** and as a result, **information about schemes and policies are reaching to the lowest levels** to all sections of the society. Due to the active participation of political parties, the clandestine manner in which government work was done before, was curbed.

Further, Mr. Pal stated, due to the devolution of responsibilities and work at the Panchayat level in Jharkhand, and the law giving them legitimate authority, the governance system at the local level has improved. Schemes like Swachh Bharat Abhiyan have worked effectively at the local level due to the involvement of the Panchayats.

Mr. Pal stated that the State Government tries to establish a Sarpanch Raj (Head of the Panchayat) rather than Panchayati Raj. The Sarpanch however is a rubber stamp and is simply treated like a signing authority. He concluded by stating that **it is important to strengthen the local body institutions** in order to build good grassroots governance.





Dr. Gouri P. Dutta

Mr. Dutta began by posing a question. Who empowers whom? He stated that there are two main types of institutions in local governance -Rural bodies and urban bodies. He further stated that a vast population of the country lives in the rural areas. During the freedom movement the main demand was for self-governance. However, the structure of governance established in the country after independence was one that mirrored the colonial structure. Panchayats and local governance was given no space in the original form of governance where the elite Indians sought to amass power instead of decentralizing it. It took nine years for the Panchayat Act to be passed in the parliament

and even then these bodies were not legitimized as autonomous political institutions but merely as agents that were involved in development activities.

In 1978, he went on, it was seen that panchayats were not working anywhere. The Ashok Mehta Committee then stated that panchayats would be political bodies and it was also proposed that Panchayats would be given certain regulatory powers over traditional institutions. However, Mr. Dutta stated, these regulatory powers were not given.

Further, he stated that throughout India Panchayats were virtually non-existent and only after the 73rd amendment, Panchayats were elected through adult franchise. According to him, when adult franchise was instituted, people were not trained or made aware of how they should use their rights. On this note, he again posed the earlier question, who empowers whom. **Empowerment**, he stated, comes from the **knowledge of your capacity and your resources** and the capacity with which you can work. The problem he opined was, people were not aware of the resources they had and people did not trust the establishment or the government.

He concluded by stating that there was a need to strengthen Panchayati Raj institutions to bring in good governance.



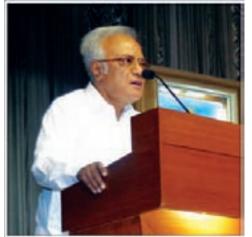


Need to enhance transparency and accountability in political parties Chairperson – Prof. Jagdeep Chhokar



[Panelists(left to right): Shri Ravindra Kumar (M.D. & Editor – in – Chief, The Statesman), Shri T. S. Krishnamurthy (Former CEC), Chairperson – Prof. Jagdeep Chhokar, Shri Manoj Bhattacharya (RSP), Shri Prabodh Chandra Panda (State Secretary, CPI), Shri Asim Dasgupta (CPI (M)), Shri Amit Choudhary (CPI(ML)(L))]

Mr. Asim Dasgupta



Mr. Asim Dasgupta made five key observations. First, he emphasized that the **need of enhancing transparency and accountability** needed to encompass not only political parties, but a larger framework, including the Election Commission, the Government at the Center and the States, the Press and relevant NGOs. Second, he noted that each political party has an ideology, consistent with which it has a program, from which its activities are derived. Therefore, these should not have any hidden aspects, and be communicated **transparently to all**, for instance through a website. Third, **activities require expenditures and receipts**, details of which should be made available in a clear statement to the ECI and Income Tax authorities. Also, these statements should also contain a list of crorepati

elected representatives as well, citing ADR's data on the same. Further, there should be an attempt to cross check the veracity of the data, and if any inconsistencies or false statements are found, the **disqualification clause of the Representation of the People Act should be enforced.** Fourth, he held the view that **elections should be totally Government funded** in kind, with a list of permissible campaign materials. Also he reiterated his support of ceiling limit on paid news expenditure, with periodic reviews based on inflation. Fifth, he suggested, that to prevent unfair elections, the Election Commission should have **permanent staff and observers at the District and State levels**, instead of temporarily assigning officers from the state cadre for election duty. He put forth that State Election Commissions should have the power to declare the election dates, and elections should have independent third party observers, like some credible NGOs. Finally, he suggested that now it was time to consider other electoral systems instead of the First-Past-the-Post method that is currently in force.





Mr. Prabodh Chandra Panda

Mr. Prabodh Chandra Panda noted that money and muscle power have vitiated our current parliamentary democracy, and various committees, administrative departments and the Election Commission have released reports giving recommendations in order to tackle this malaise. However most of these recommendations have not yet been complied with, particularly the Indrajit Gupta Committee's recommendations. He agreed that state funding of elections was a good measure, however funds not in cash, but in kind, for example propaganda material like posters, hoardings etc. and fuel for vehicles, posters and so on. State and Central governments need to raise

funds for this. Next, he stated that all political parties need to submit their **accounts to the Income Tax authorities and the Election Commission** in a timely manner. The source of the donations, should be disclosed properly, and all collections above Rs. 10,000 should be in the form of a cheque or bank draft. He held forth that the current **First-Past-the-Post electoral system should be replaced with a proportional voting system**, citing the fact that the government at the Centre had secured only 31 per cent of the total vote, which meant that 69 per cent of the voters did not vote for them. He disagreed with the view that political parties should be under the Right to Information Act. He concluded by stating that the Election Commission was currently handicapped by having a low number of employees, and depended on the State and Central government for officers to be deputed. This was greatly hampering its autonomy and independence.



Mr. Manoj Bhattacharya

Mr. Manoj Bhattacharya considered the rising wealth among elected representatives, and noted that behind every huge accumulation of wealth, there are huge crimes as well. He stated that our **democracy** was limited to casting votes once every five years, and it was a mockery of democracy that voters did not have any right to monitor their elected representatives. He noted that democracies around the world were facing turbulent times, and governments existed only to serve the interests of an oligarchy. Further, he observed that the paradigm of development had shifted to serve the interests of a few large industrialists and multinationals corporations. He queried

whether democracy would be able to survive, when there are millions of the underprivileged are not given a voice to represent their needs.







Mr. Amit Choudhary

Mr. Amit Choudhary observed that elected representatives comprised a minority of the nations' wealthiest people. Subsequently, he wondered if they would be really concerned about the issues plaguing the vast majority of the impoverished population, especially those subsisting below the poverty line. He observed that **donations to political parties comprised of large portions of black money**. To resolve this, he stated that **State funding of elections is a must**. Also, apart from full disclosure of criminal background to the Election Commission, this data must be made **readily available and widely communicated to voters prior to elections**. He advised

implementing 'Right to Recall' to increase accountability of winners. Referring to donations, he stated that even a transaction of Rs. 1000 should be in form of a cheque. Finally, he concluded that pressure must be brought upon political parties, from the outside, to enact such measures.

Mr. Ravindra Kumar

Mr. Ravindra Kumar observed that **political parties were most vocal about political reform, principally when they were not in power**. As a general rule, he felt that the political class favored opacity in electoral systems, and all others should act in counterpoint to this. He also noted that no political party had yet complied with the CIC's direction to bring them under the purview of the RTI Act. He noted that the general attitude of the political class was, that if the law did not suit them, it can be ignored. Finally, he concluded by reiterating that **the moment parties came into power, they felt a compelling need to be opaque**. Any transparency that is sought, would have to come from the voters themselves.









Mr. T.S. Krishnamurthy

Mr. T.S. Krishnamurthy concurred with the opinion that political parties changed their demeanor when in and out of power, and the Supreme Court alone had been effective in implementing reforms in the last ten years. He accepted that State funding of elections could be effective, but only if a national election fund was created for donations, whether corporate or individual. If necessary, a cess could be levied by the Central government for this. He felt that **State Election Commissions were lacking in power**, and were at the mercy of the respective State Governments. He also affirmed that the **first-past-the-post system was flawed**, allowing candidates with low

percentages of the total votes to be elected. He was also critical about internal democracies in parties, referring to cases where posts in parties were not rotated, and **internal elections were opaque**. He concluded by hoping that political parties would increase internal democracy and recognize the need for immediate reforms.

Vote of thanks

Prof. Satyabrata Chowdhury of West Bengal Election Watch, who is an active member of the Election Watch team of West Bengal and acting President of Indian Association, gave the vote of thanks to end the first day of the 11th National Conference.

Prof. Chowdhury said that the first day of the National Conference jointly organised by ADR and WBEW started off with the National Anthem and inaugurated by Swami Suparnananda Maharaj who made an interesting comment by saying that the political parties created division among the people whereas the spiritual world united the people. Prof Chowdhury thanked all the speakers who participated in the four sessions apart from also thanking the audience who came from long distances whose presence made the program meaningful.





Day - 2 (22nd March'15)

2014 Lok Sabha and Assembly elections: Lessons learnt and future course of action

Chairperson: Maj. Gen. Anil Verma (Retd.)



[Panelists(left to right) – Shri Ranjan Mohanty (Odisha Election Watch), Shri Sudhir Pal (Jharkhand Election Watch), Dr. Amiya Samanta (West Bengal Election Watch), Chairperson - Maj. Gen. Anil Verma (Retd.), Shri Ajit Ranade (Maharashtra Election Watch), Shri Balvinder Singh (Jammu & Kashmir Election Watch), Shri Rakesh Dubuddu (Andhra Pradesh Election Watch), Shri Anil Sharma (Uttar Pradesh Election Watch)]

Mr. Ranjan Mohanty (Odisha Election Watch)

Mr. Ranjan Mohanty said that during Odisha Assembly and the Lok Sabha 2014 elections, people volunteered for various things during the campaign period. One example he gave was the **sand art on ADR & NEW on Puri Sea Beach**. He shared five major activities which were taken up by Odisha Election Watch:

- 1. My Vote, My Country campaign.
- 2. Engagement with the youth in collaboration with NSS & Odisha CEO office.
- 3. Collaboration with media.
- 4. Using RTI tool.
- 5. Helpline.

He specified that they mainly focused their campaign in **three major districts of Odisha** i.e. Bhubaneshwar, Sundergarh and Puri. They held meetings with women folks apart from launching auto rickshaw campaigns, awareness meetings with the youth, signature campaigns, oath taking by students, poster campaign, F.M.







radios, and T.V campaign during festival times. They also had **regular engagement with the media** and organised press conferences and panel discussions.

Mr. Ranjan Mohanty stated that their affidavit analysis awareness included:

- 1. Support to Election Officers for EVM awareness.
- 2. Fostering integration among government agencies as well as civil societies.
- 3. Timely information sharing on candidate's profile.
- 4. Informed youth activity in election process not just as volunteers but as responsible citizens.

Giving a way forward on behalf of Odisha Election Watch, Mr. Ranjan Mohanty mentioned following points:

- 1. Mobilisation of youth and students for decriminalization of politics.
- 2. Electoral reforms in local body elections.
- 3. Regular engagement with media.
- 4. MLA performance assessment.
- 5. Study of voter turn-out in urban areas.
- 6. Use of RTI in getting different information.

Mr. Sudhir Pal (Jharkhand Election Watch)

Sharing the experience on behalf of Jharkhand Election Watch, Mr. Sudhir Pal stated that they carried out a massive campaign programme during Jharkhand Assembly elections. He said that the main objective behind the campaign during Jharkhand elections was:

- 1. How to conduct free and fair elections.
- 2. Eligible voter's interest and involvement in active voting participation.
- 3. Awareness on the issue of selling of votes/bribing.
- 4. Increase voter turn-out during elections.
- 5. Propagate through various mediums the "Right of the voters to know".
- 6. Engagement with the CEOs and DEOs.







- 7. Urging political parties to reduce money and muscle power.
- 8. Workshops cum discussion with youth about their issues in election manifesto for voicing their demands.
- 9. Agenda dialogue with the representatives.

Mr. Sudhir Pal also shared his **experience on media advocacy** that was conducted during the elections. Their work included the following:

- 1. Regular articles in media carrying ADR's data in English and Hindi.
- 2. Live phoning programme on T.V. Approximately 2500 phone calls came on different issues.
- 3. Toll free number was widely published and used by the voters.
- 4. Continuous media coverage of campaigns.
- 5. A total of five press conferences were held during the campaigning time.
- 6. "Jharkhand ka Naxtra" live programme on candidate's profile on Naxtra T.V.
- 7. Based on Lily Thomas judgment, one MLA nomination was rejected/disqualified.
- 8. Filed reports with the use of ADR data.

In conclusion, Mr. Sudhir Pal gave details of the **outcome of the campaign** that was conducted by the Jharkhand team. This included:

- 1. Travelling in 32 assembly constituencies, the team was able to reach 2 lakh people.
- 2. More than 10,00,000 signatures were obtained for ethical voting.
- 3. 10,000 cm square column space was devoted by print media for the campaign.
- 4. 90 hours of T.V programme were conducted.
- 5. There was an innovative "campaign on wheels" where in three local trains in Jharkhand were used by volunteers for their campaign on ethical voting in collaboration with the railways.

Mr. Sudhir Pal also shared the impact of the activities that were being carried out by the Jharkhand Election Watch. He pointed out that **due to their campaign and advocacy**, there was **an increase in the voting turn-out by 9%**. One nomination was rejected based on the ADR & NEW report. Because of the campaign, around 2000 liquor bottles and approximately Rs. 4 crore were seized.







Dr. Amiya Samanta (West Bengal Election Watch)

Dr. Amiya Samanta said that law and order situation was different in West Bengal and hence during elections, their main effort was to implement the "Rule of Law". He mentioned that Central Security Forces were deployed in booth areas. As a result of this there was a peaceful atmosphere during elections. Dr. Samanta also informed that West Bengal Election Watch team had been successful in generating public awareness. He said that the print media in West Bengal is not as alert as the electronic media. He stated that the West Bengal Election Watch transmitted awareness about myneta through mobile phones.

Political parties appoint candidates with winnability factor. He pointed out was that we need to have a practical approach as far as the criminal candidates are concerned. He said that we need to distinguish between crime and its seriousness. The question is- How to identify a criminal? He also concluded by saying that the West Bengal Election Watch team is motivating everyone to vote and also creating awareness among the masses and educating them to choose the right person.

Dr. Ajit Ranade (Maharashtra Election Watch)

Dr. Ajit Ranade said that Maharashtra is the second largest state in India with a population of about 11 crores. Maharashtra is officially 55% urban and un-officially he quoted, it is even more than 60% urban. He pointed out that during the period 2014-2015, the State of Maharashtra saw two elections i.e. Lok Sabha elections and Maharashtra State Assembly elections and this time the voter turnout was higher. He also pointed out that in Maharashtra problem of voting is usually in urban areas.



Dr. Ranade stated that the Maharashtra Election Watch conducted a **state-wide survey in 35 districts** of about 25-27 thousand voters. It was named as "**Intensive voter survey**" which roughly cost around Rs. 50 per respondent. **Fund for this campaign were generated locally**. The survey resulted in a rich data set on the issues of governance.

He mentioned that the Maharashtra Election Watch also conducted a **3 minute video campaign** where in the candidates were allowed to speak on whatever they wanted to say without any questions being asked in between. In places, where videos could not be made available, audios were used. In the end, he stated that, the Maharashtra Election Watch team carried out a **comparative analysis of the candidates of 288 constituencies** and conveyed this to the public.







Mr. Balvinder Singh (J&K Election Watch)

Mr. Balvinder Singh stated that in J&K, criminalization of politics is not a major issue but the **use of money power** is a bigger problem. He said that during elections, J&K Election Watch **engaged volunteer students and conducted voter awareness workshops**. He also pointed out that during the campaign, they learnt that people of J&K did not realise the importance of their vote. Therefore, the J&K Election Watch team had worked on this aspect with the slogan "Your vote can bring a change". They also conducted an auto poster rally which turned out to be quite successful.

Mr. Rakesh Dubuddu (Andhra Pradesh/Telangana Election Watch)

Mr. Rakesh Dubuddu stated that due to the issue of bifurcation in the states of Andhra Pradesh and Telangana, other issues just slipped aside. It was the first election after bifurcation therefore, it overshadowed all other issues. He said that in the year 2014, the voting percentage was around 75% and there was an active participation of young people during the elections. The election office of the state also issued online forms.



Mr. Dubuddu said that Andhra Pradesh has a notorious reputation

of an increasing role of money power in elections and stated this problem has not yet diminished. One of the positives, however was that a lot of money was seized since a lot of money was spent. Their Election Watch team also carried **Padh yatra in 5-6 constituencies**. He said that media in the state was quite supportive. One concern that he pointed out was that the local media in the state was not quite receptive to our data. He said that their state also saw a lot of young candidates contesting, 68% of the candidates in the state were below 50 years of age.

Mr. Dubuddu shared following lessons that their team learned during the campaign:

- 1. Criticism from some quarters about categorizing the criminal cases booked during statehood agitation.
- 2. Issues highlighted seemed to have greater appeal with the urban voters.
- 3. Need to customize message depending upon the audience.







Mr. Anil Sharma (U.P. Election Watch)

Mr. Anil Sharma said that during Lok Sabha elections, the **U.P. Election Watch team covered 23000 km in 40 constituencies**. He said that their campaign was on *"Clean and Clear candidates"*. He stated that their objective was to have 1 lakh volunteers to be associated with U.P. Election Watch by 2017. He pointed out that U.P. Election Watch team used a video van medium with the slogan "Ache ko chune, Sache ko chune". He also shared that due to their campaign, Atiq Ahmed lost elections.

Ms. Mashqura Fareedi (National Election Watch)

Ms. Mashqura Fareedi briefed all present regarding the planning and conduct of the National Election Watch campaign for the Delhi Assembly elections held in December, 2013 and the Lok Sabha elections held in April-May, 2014.

She said that a planning meeting was arranged in mid-2013 to strategize the Election Watch process for Assembly and Lok Sabha elections in collaboration with representatives from National Election Watch. ADR and NEW launched a nation-wide Campaign titled 'Mera Vote Mera Desh' for the Lok Sabha elections with the objective to reduce



the influence of crime and money in elections. The Campaign rolled out in different parts of the country, urged voters to "vote for clean candidates" and not yield to inducements during elections ("don't sell your vote"). As part of the Campaign, a gamut of activities were initiated in all states including awareness drives with community based organizations, colleges and universities, media campaigns using print/electronic media, social platforms like Facebook and Google, street plays etc. The Campaign was endorsed by a number of celebrities (local and national) whose messages to voters were relayed using various media. Information on contesting candidates were provided to citizens through Press releases, toll free Helplines, SMS services and out bound bulk calls.

Ms. Fareedi also stated that the partners across the states undertook extensive campaigns to spread awareness regarding the need for a clean, transparent and accountable polity. The Mera Vote Mera Desh Campaign was spearheaded by the National Election Watch coordinators in almost every state in active collaboration with the Election Commission, civil society organizations, educational institutions, NSS, women's groups and various community based organizations.

The Trustees and Head of ADR along with the State Coordinators in states were invited to various talk shows/discussions on national and regional TV channels. They also participated in different Conferences and Seminars across the country on issues of elections and reform.





To solicit the support of various individuals for the Campaign, ADR also wrote letters to the individuals from various sections of the society informing them about the 'Mera Vote Mera Desh' Campaign and requesting their support towards decriminalization of politics and reducing the impact of money in our democracy.

ADR undertook a massive outdoor campaign across the country covering 81 major cities where the above messages were displayed through posters featuring Aamir Khan in buses, ISBT bus depots, railway stations, metros and autos.

Media Neutrality and its Significance in democracy

Chairperson: Dr. Vipul Mudgal



[Panelists(left to right): Shri Sharad Gupta (Dainik Bhaskar, Editor, Political Affairs), Shri Snehashish Sur (Senior Journalist, Doordarshan Kendra, Kolkata), Chairperson - Dr. Vipul Mudgal, Shri Siddharth Varadarajan (Senior Journalist, Editor & Academician), Shri Suvojit Bagchi (The Hindu, Bureau Chief, Kolkata)]



Dr. Vipul Mudgal

Chairperson of the session welcomed the four eminent panellists, and requested those partners of Election Watch who also conduct conferences to include representatives from the media as a part of the analysis of the society. He stated that the **media played a very important role in mediating such as how elections are mediated**, which is the current topic of discussion. He emphasised that media should be included as a mainstream player in conference and seminars.







Mr. Snehashish Sur

Mr. Snehashish Sur said, ADR and WBEW's pre- and post- election analysis are very useful for media houses as they cannot afford to do it individually. He stated that ADR has the material and Media has the carriage to reach out to the last mile so a partnership between the two is very important for the dissemination of information. Agreeing with Dr. Mudgal he said, we need **inclusive media as social activism is incomplete without media** as it transmits the message to the grass root level.

Mr. Sur said media is called the 'Fourth Estate,' but unlike the three other estates, there is no homogeneity in the structure of media. He

explained, for the Legislative, the person is directly or indirectly elected by the people, similarly in the Executive and Judiciary machineries, people know the hierarchy and how to reach the top position. Though the responsibility has been given to the Fourth Estate but the society has not given a structure to it.

He said, journalists are heftily paid, those covering national and international events are well taken care of but reporters at the lower rung have to struggle for their survival. Talking about the ownership of media houses, he said, it's the media house owners who are calling the shots and most of the big media houses are controlled either by big corporates or publication houses. Since the mainstream media's main focus is only on profit maximizing that is why there is an **absence of fair**, **balanced and objective coverage** today. Media is not at all objective or neutral because of its **business interests and has also leaned towards political parties for its own existence** and furtherance.

There are election codes for the media and it is observed in letter and spirit only by the public service broadcaster, whereas most of the other media organizations do not follow it. He cautioned that there is a **need to relook the existing election codes for media**. The codes should be pragmatic and suit the situation because certain codes are very difficult to be followed and can lead to existential crisis.

Mr. Sharad Gupta

Mr. Sharad Gupta said it goes without saying that **unless media is honest and neutral democracy cannot function properly**. He said that people take media reports as gospel truth, especially in the rural areas. Media had a lot of credibility in the past but the scenario is fast changing today. Both newspapers and news channels are now publishing/broadcasting 'coloured/biased' reports and all **media houses display openly leanings towards a political party** or a person. There is no neutrality or transparency in the news reports and even common people know which media houses work for which party.







He stated that every person is entitled to his/her own ideological leanings but someone's **personal beliefs should not reflect in their news reports**. News and views are two different things and if both of these merge, it creates a dangerous situation.

Like US, in India also most of the major media houses will soon be monopolised by some big corporate houses, soon it will be very easy to create "selective media hype" and build selective mass opinion in favour/against a person or party.

The credibility of journalists has surely reduced a lot in the past few years, and now the **focus has shifted from journalists to media owners**. Thus there is an urgent need to debate as to how media neutrality can be maintained in today's scenario.



Mr. Suvojit Bagchi

Mr. Suvojit Bagchi talked about the reality of grass root level or rural media reporting and how rural area is being ignored and information is omitted deliberately in favour of some powerful people, parties and organizations. He informed that **reporters in rural areas are not paid by the Media houses**, but are asked to collect money from corporate houses and they get some percentage of that money in return. Hence, in return of these financial donations, the malpractices and corruption which corporate houses indulge in, goes unreported.

Most of the mainstream journalists/media houses are not interested in the activities of rural areas despite over 70% of the Indian population being in villages. Thus in the mainstream journalism, there is a **huge rural disconnect and rural India is not being covered properly**. There is an urgent need to find ways to address this issue.

Mr. Siddharth Varadarajan

Mr. Siddharth Varadarajan said that ideally media should do neutral, informative, free, fair, unbiased and factual reporting of elections and other democratic processes. It should also highlight burning issues of the day and raise the public awareness to make sure that elections are fought on issues not anything else. Media should also be vigilant during elections and report electoral malpractices and keep a sharp eye focus on corruption taking place at any level of elections. Media should also focus on the need for innovation, change and reforms in India's democratic system.







However, he stated that unfortunately, the **vast majority of media houses do not play these roles**. Talking about the 2014 Lok Sabha elections, he said it was a high watermark in media's departure from neutrality. He felt that media had deliberately did the selective image making of one person's candidature forgetting its responsibility to do neutral, factual and fair reporting. This had been done by media many times in the past as well. He emphasized that as a correspondent, one may hate or admire one party or person, but while writing a report, one should only talk about facts.

He also talked about the new trend of 'Editorialising' of reports or contents, which is actually an act of reporters and anchors taking sides on a particular issue. He said this is quite prevalent in the media reporting today and it is very unfortunate that the **lines between presentation of news and views have completely blurred.**

Talking about the issue of 'Selective Vigilance' by Media, he said there is a lot of focus on last mile corrupt practices, like seizure of cash and liquor, during elections but no journalists bother to ask when the political parties tell ECI that a **vast majority of their donations or fund collections have come in the form of cash.** This needs to be investigated.

Media should also throw its weight behind issues like **imposing a ceiling on political parties' election expenditure** or the national political parties' **refusal to comply with CIC's order** of bringing them under the ambit of RTI.

While concluding, he stated that there is a **need of much greater transparency** in election related advertisements in newspaper and on news channels. Media houses must declare who has paid for the advertisement party, candidate or any other corporate house or individual. A **ban on both digital and print media advertisement** 24 hours ahead of the polling is recommended as presently only news channels face this ban and not the print media.

Conclusion

Concluding the session, the Chairperson Dr. Mudgal stressed on the following points:

- 1. Today's society is becoming increasingly a "mediated society" where we do not go to the reality but reality comes to us every day on television.
- 2. Our consumption of politics is becoming more and more second hand. We don't consume politics directly by taking part in dharnas, rallies or other such activities but we get all the information via the media only.
- 3. Because we do not go to the reality, it is being "enhanced" or "distorted" deliberately and purposefully by the media houses for their business interest or political connections. Thus there is a case for serious and deep media research on the issue.





- 4. There has been an **unprecedented rise in demagoguery**, political spin, spin doctoring, impression management, image management, so we find that good can become bad and bad can become good. Media creates enemies, villains, heroes and celebrities and also destroys the same when needed.
- 5. Today politics is a brand, political leaders are a brand and the parties and candidates spend a lot of money on the making of a brand and media is profiting immensely from this.
- 6. Media is steering public opinion with the help of very sophisticated technologies, survey, lies and half lies.

Hence, it is quite obvious that "neutrality," which is the very basis of a news report, is totally absent in today's scenario. Except a few journalists or media houses, most of the media organizations are gaining huge benefit by indulging in above mentioned actions. He urged all to look at media in the new light and not just for finding friends or enemies. Media should be seen from the perspective of a mediated society in which the politics is consumed second hand and brought to us in a distorted manner.

He asked all to follow the slogan, "Media ko khabar denge aur Media ki khabar lenge."

Resolutions and 'Next steps for NEW'

Prof. Trilochan Sastry, Founder Member and Trustee, Association for Democratic Reforms and National Election Watch, highlighted the following issues which were deliberated upon during the proceedings of the conference:

1. Abrogation of responsibility by the CIC in its 16th March, 2015 order

On this matter the assembly urged the CIC to take *suo motu* action to correct this grave mistake which puts the existence of the RTI Act under threat and the very foundation of democracy at risk.

2. Non-compliance by the Political Parties of the June 3rd, 2013 CIC judgment

The assembly expressed its disapproval at the continued defiance of the law by the political parties by not appointing CPIOs and showing complete disregard of the CIC order dated 3rd June, 2013 which classified the National Political Parties as a 'public authority' thereby bringing them under the purview of the RTI Act.

3. Black money in politics

ADR and NEW resolved to work on both the supply as well as demand side of this issue by:

• Increasing transparency and accountability in the funding and expenses of elections through strategic litigation like the petition pending at the Delhi High Court on the Election Expenditure of Political Parties.





- Increasing the use of technology like the Election Watch Reporter to track election expense monitoring.
- Generating awareness at the grassroot level on the issue of black money in politics and the opaque financing of political parties to mobilize public opinion on the issue.

4. State Partners

ąJ

The assembly also accepted the suggestion to arrange regular meetings between ADR and its State Partners to formulate strategies and action plan for the future and to exchange experiences.

Vote of thanks

Shri Biplab Halim, State Coordinator of West Bengal Election Watch, extended his heartfelt thanks to everyone and expressed happiness on getting the opportunity to host the 11th National Conference in Kolkata. He also stated that it would benefit one and all if there was a strategic management workshop so as to be able to recollect our past and reflect on the future of ADR-NEW.

Shri Halim stated that the democracy was 'of the people, by the people, for the people' and hence it was very crucial for everyone to determine ways to translate this definition into practice.

He concluded by extending his thanks to all the participants, team from ADR, Head and Trustees of ADR and his colleagues who, together, made the 11th Annual National Conference a grand success.





National/State Election Watch Coordinators

National Coordinator/Head

Maj. Gen. Anil Verma (Retd.) +91-88264-79910 anilverma@adrindia.org

Andhra Pradesh

Mr. Rakesh Reddy Dubbudu +91-98854-19012 rakesh@bhumi.in

Arunachal Pradesh

Dr. Nani Bath +91-94369-52143 nanibath@rediffmail.com

Assam

Mr. Tasaduk Ariful Hussain +91 361 2338-888 +91-94350-54775 arif@nestinfo.org

Bihar

Mr. Rajiv Kumar +91-9631976889 rajivkumar_patna@rediffmail.com

Chhattisgarh

Mr. Gautam Bandyopadhyay +91-0771 4064-328 +91-98261-71304 gautamraipur@gmail.com

Goa

Mr. Bhasker Assoldekar +91-98203-53159 vibhanatural@hotmail.com

Guiarat

Prof. Jagdeep Chhokar +91-99996-20944 jchhokar@gmail.com

Haryana

Mr. Jaskirat Singh +91-93160-84953 jaskirats@gmail.com

Himachal Pradesh

Mr. V.K. Malik +91 9418150001 vinodkmalik@hotmail.com Ms. Abha Bhaiya

+91 9468768872 abhabhaiya@gmail.com

Mr. Bhim Singh

+91 9418073190 bhimsingh1975@gmail.com

Mr. Sanjay Choudhary

+91 94184-94041 +91 8679209350 choudharysanjay90@yahoo.com

Jammu & Kashmir

Mr. Balvinder Singh +91-94191-95295 sangarshrtimovement@gmail.com

Dr. Shaikh Ghulam

+918803943048 drshaikhgr@gmail.com

Jharkhand

Mr. Sudhir Pal +91-0651 2202-202 +91-94311-07277 manthanindia@gmail.com

Karnataka

Prof. Trilochan Sastry +91-94483-53285 trilochans@iimb.ernet.in

Dr. R. Balasubramaniam

+91-94480-79611 drrbalu@gmail.com

Mr. Harish Narasappa

+91-98860-27804 harish@dakshindia.org

Mr. Vasudev Sharma

 $+91\text{-}94484\text{-}72513\\ vadeshanv@gmail.com$

Ms. Kathyayini Chamaraj

+91-97318-17177 kchamaraj@gmail.com

Mr. Gururaja Budhya

+91-94488-49353 gururajabudhya@gmail.com

Kerala

Mr. T. Ravindran +91-93493-33458 ravindran@transdot.net

Madhya Pradesh

Ms. Rolly Shivhare +91 9425466461 rollyshivhare@gmail.com

Maharashtra

Dr. Ajit Ranade +91-97022-15312 ajit.ranade@adrindia.org

Mr. Sharad Kumar +91 9869 403721 sharadkumar40@gmail.com

Manipur

Ms. Laishram Mesiah Devi +91 8974955503 mesiahdevi@gmail.com

Meghalaya

Ms. Mayfereen Ryntathiang +91-8575017983 mayfereenlyngdoh@gmail.com

Mizoram

Mr. Vanlalruata +91-98633-73928 ruataprism@gmail.com

Nagaland

Ms. Hekani Jakhalu +91 9856307033 hekanijakhalu@yahoo.com

Odisha

Mr. Ranjan Kumar Mohanty +91-0674 2382175 +91-0674 2352278 +91-94370-13723 pecuc@hotmail.com, odishaelectionwatch@gmail.com

Punjab

Mr. Jaskirat Singh +91-93160-84953 jaskirats@gmail.com





Mr. Parvinder Singh Kittna

+91 9814313162 pavikittna@gmail.com

Puducherry

Mr. P. Joseph Victor Raj

+91-94860-86938 vrhope@gmail.com

Rajasthan

Mr. Nikhil Dey +91-94140-04180 nikhildey@gmail.com

Mr. Kamal Tak +91-94134-57292 rajelection0@gmail.com

Telangana

Mr. Rakesh Reddy Dubbudu +91-98854-19012 rakesh@bhumi.in

Mr. Rajendra Prasad +91 9849 648363 rmvfindia@gmail.com

Tamil Nadu

Dr. Sudarsan Padmanabhan +91-044 2257-426 +91-94447-82884 padmanab@gmail.com

Tripura

Mr. Biswendu Bhattacharjee +91-94361-25214 biswendu.tripura@gmail.com

Uttar Pradesh

Mr. I.C. Dwivedi +91-0522 2391-141 +91-0522 3094-504 +91-94150-01468 icdwivedi@gmail.com

Mr. Sanjay Singh +91-94151-14151 sanjaysingh033@gmail.com

Dr. Lenin +91-99355-99333 +91-99355-99330 lenin@pvchr.asia

Mr. Sanjay Rai +91-522 2349-556 +91-9415121462 sanjaykrai@yahoo.com

Mr. Mahesh Anand +91-94152-33694 +91-99367-47774 gramswarajsamiti@gmail.com

Uttarakhand

Mr. Sanjay Sondhi +91 135 2607452 sanjay.sondhi1@gmail.com

Mr. BP Maithani +91-9012878346 maithani_56@yahoo.com

Dr. Ravi Chopra 0135-2773849, +91-9411135976 psiddoon@gmail.com

Mr. Girija Pande +91-9412351759 girija.pande@gmail.com

West Bengal Mr. Biplab Halim +91-033 2483-6491 +91-033 2472-5571 +91-98311-24736 bipimse@cal.vsnl.net.in, bipimse@hotmail.com

Dr. U**jjaini Halim** +91-98302-99326 ujjainihalim@hotmail.com





Photo Gallery



















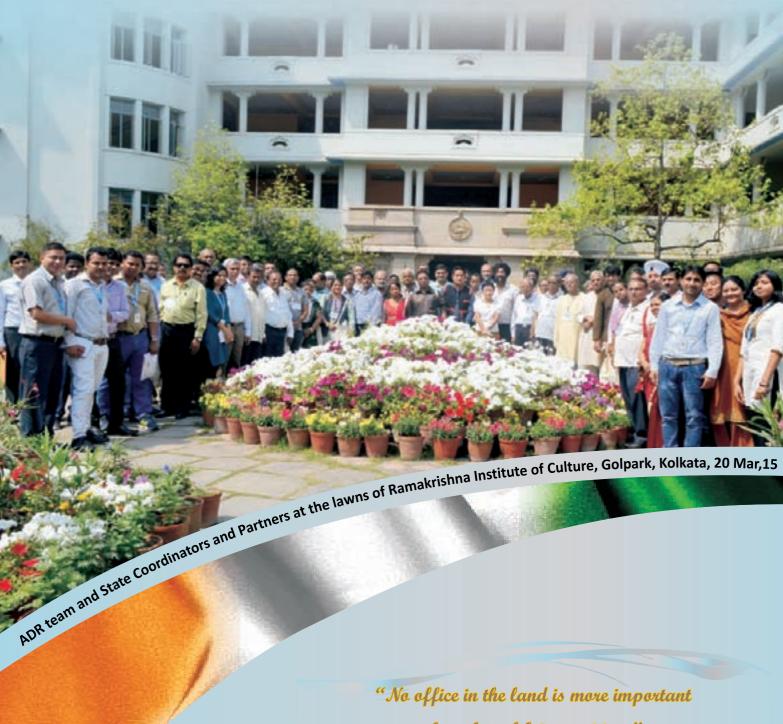












"No office in the land is more important
than that of being a citizen"
-Felix Frankfurter



Association for Democratic Reforms

T-95 A, CL House, First Floor, Near Gulmohar Commercial Complex, Gautam Nagar, Landmark: Green Park Metro Station (Gautam Nagar exit), New Delhi-110 049, Tel.: 011-41654200, Fax: 011-46094248

Email- adr@adrindia.org

Websites- www.adrindia.org, www.myneta.info

Toll-Free Helpline No.- 1800-110-440



